शिक्षक अधिगम समुदाय – सुरपुर से प्राप्त अन्तर्दृष्टि

उमाशंकर पेरिओडी

हमने 2008 में बाल स्नेही स्कूल पहल की समीक्षा की। 2005 में यह पहल सुरपुर में शुरू की गई थी जो उत्तर–पूर्व कर्नाटक (NEK) का एक अविकसित और अल्प सुविधा प्राप्त क्षेत्र है। इसका उद्देश्य था बाल स्नेही वातावरण में सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना। हमारे ब्लॉक में 300 से कुछ अधिक स्कूल थे जहाँ हम इन 5 क्षेत्रों में कार्य कर रहे थे : 1. स्कूल का वातावरण, 2. कक्षा का वातावरण, 3. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, 4. शिक्षक शैक्षिक विकास और 5. सामुदायिक भागीदारी।

समीक्षा करने पर यह बात सामने आई कि इन पाँच क्षेत्रों में सबसे अधिक उपेक्षित क्षेत्र थे शिक्षक शैक्षिक विकास और सामुदायिक भागीदारी। समीक्षा के परिणामों पर जब और गहराई से विश्लेषण किया तो यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक शैक्षिक विकास के बिना शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं किया जा सकता। इसलिए हमने सोचा कि अगले चरण में शिक्षक शैक्षिक विकास या शिक्षक पेशेवर विकास पर ध्यान देना चाहिए। इसके लिए हमने बहुत गहन विचार–विमर्श किया, जानकारियाँ हासिल कीं और फिर हम इस नतीजे पर पहुँचे कि हमें मेलों या बाल–मेलों का आयोजन करना चाहिए और शिक्षक अधिगम केन्द्रों (Teacher learning Centers -TLC) पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

हम जिस मेले का आयोजन करते हैं वह किसी विषय विशेष आधारित होता है–उदाहरण के लिए विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान या भाषा पर। एक स्कूल या स्कूलों का एक समूह किसी एक विषय या थीम की जिम्मेदारी लेता है और अपने बच्चों को इस बात के लिए तैयार करता है कि वे मेले में भाग लेने वाले लोगों (विद्यार्थियों, शिक्षकों और समुदाय) के सामने उस अवधारणा को अन्तःक्रियात्मक तरीके से प्रस्तुत करें। इन पाँच सालों में हमने अलग–अलग विषयों पर लगभग 400 मेलों का आयोजन किया है। पहले मेले के आयोजन में सभी 25 मार्गदर्शियों ने भाग लिया था। हम सभी जन एक हफ्ते तक स्कूल में ही रहे। लेकिन अब जब कोई स्कूल मेले का आयोजन करता है तो हमारा केवल एक मार्गदर्शी उनकी सहायता करता है। सारा नियोजन और बच्चों की तैयारी शिक्षक ही करते हैं। यह देखकर बड़ी खुशी होती है कि कैसे ये सारे शिक्षक, जो सार्वजनिक स्कूल के शिक्षक हैं, खुद को तैयार करते हैं। जब वे बच्चों को तैयार करते हैं तो बच्चों द्वारा पूछे जाने वाले सवाल उन्हें इस बात के लिए मजबूर कर देते हैं कि वे उस अवधारणा के बारे में और ज्यादा जानकारी हासिल करें। इस प्रकार शिक्षकगण बच्चों के साथ में अपने अधिगम की यात्रा शुरू करते हैं। आमतौर पर सरकारी प्राथमिक स्कूलों के ज्यादातर शिक्षकों ने अपने स्कूल या डी.एड., बी.एड. कोर्स के दौरान विज्ञान के प्रयोग या शिक्षण–अधिगम सामग्री का इस्तेमाल नहीं किया होता। अस्तु, जब मेले का आयोजन करने की बात पक्की हो जाती है तब आसपास के स्कूलों के सभी शिक्षक साथ में मिलकर योजना बनाते हैं, उदाहरण

के लिए विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षक अवधारणाओं और तत्सम्बन्धी गतिविधियों की तैयारी करने लगते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान वे उन अवधारणाओं के बारे में पढ़ते हैं और ज्ञान व जानकारी साझा करने लगते हैं। इस प्रकार साथ–साथ कार्य करने से उनमें आपसी सामंजस्यता की भावना का विकास होता है और इसी से अनौपचारिक शिक्षा मंच की उत्पत्ति होती है।

कुछ समय के बाद शिक्षकों का सीखना तेजी से बढ़ने लगता है। वे अपने विद्यार्थियों और अन्य शिक्षकों के साथ इस सीख का विस्तार करते हैं। यह प्रक्रिया धीरे–धीरे आगे बढ़ती है और अन्य स्कूल के शिक्षकों तथा हाईस्कूलों तक पहुँच जाती है। वे अनुभवी लोगों और विशेषज्ञों से मिलते हैं और अपने ज्ञान का संवर्धन करते हैं। साथ में मिलकर सीखने वाली यही बात मेलों की सबसे अच्छी बात है। इससे लोग संवेदनशील हो जाते हैं और दूसरों से सीखने को तैयार रहते हैं। मैं समझता हूँ कि दूसरों के साथ जुड़ने की यही शुरुआत है। शिक्षकों व विद्यार्थियों, अन्य शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों और अधिकारियों के बीच का पदानुक्रम दूर हो जाता है और यह बात शिक्षक अधिगम समुदाय के विकास के लिए अपेक्षित है।

एक–दूसरे से मिलने और उनसे सीखने से शिक्षकों को इस बात की प्रेरणा मिली है कि वे दूसरों को भी मेलों का आयोजन करने के लिए प्रोत्साहित करें और इसमें उनकी मदद करें। मेले की तैयारी ही उसकी सफलता की कुंजी है और इसी तैयारी के दौरान शिक्षकों की क्षमता का निर्माण होता है क्योंकि वे साथ–साथ पढ़ना, खोजबीन करना, प्रयोग करना और विचार करना शुरू

कर देते हैं। इस प्रकार से निर्मित गैर औपचारिक स्थान उन्हें इस बात के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए काफी है कि वे खुले विचारों वाले उत्साही शिक्षकों का एक ऐसा समूह बनाएँ जो कुछ करना चाहते हैं, सीखना और योगदान करना चाहते हैं। जहाँ मेले की तैयारी सीखने का अवसर देती है वहीं मेले का आयोजन उन्हें अपनी पहचान बनाने का मौका देता है। माता–पिता व समुदाय शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और शिक्षक समुदाय व उच्च अधिकारियों से उन्हें प्रशंसा मिलती है।

इस बिन्दु पर पहुँचकर हमने महसूस किया कि अधिगम के इस अनौपचारिक अवसर को थोड़ा औपचारिक और पुख्ता कर देना चाहिए क्योंकि अधिगम एक गम्भीर प्रयास है जिसके लिए व्यवस्थित अध्ययन, चर्चा और साझेदारी की जरूरत है। और तब शिक्षक अधिगम केन्द्र को शुरू करने का विचार मन में आया।

सुरपुर में हमने पहले चार शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र (टी.एल.सी.) शुरू किए। टी.एल.सी. शिक्षकों के मिलने, साझा करने और सीखने का स्थान है। इसका नाम शिक्षक संसाधन केन्द्र से शिक्षक अधिगम केन्द्र में बदलने के लिए काफी विचार–विमर्श हुआ। यह चिन्ता थी कि यह एक निष्क्रिय संसाधन केन्द्र बनकर नहीं रह जाए। जोर इस बात पर था कि यह शिक्षकों का एक सक्रिय अधिगम केन्द्र होना चाहिए। यह सच है कि शुरुआती दौर में शिक्षकों ने अपनी मर्जी से भाग नहीं लिया। टी.एल.सी. में शिक्षकों के संगठित समूह का निर्माण

करने में 18 महीने लग गए। प्रारम्भिक कार्यक्रमों में उन सामान्य कठिन बिन्दुओं को लिया गया जिन्हें अगले ही दिन कक्षा में पढ़ाना होता था यानी तात्कालिक समस्या का हल खोजना। लेकिन आगे का रास्ता शिक्षकों ने स्वयं दिखाया। धीरे–धीरे विषय के शिक्षकों को लगा कि उन्हें कक्षा की आम समस्याओं का हल खोजने के लिए नियमित रूप से मिलना चाहिए। वे महीने में एक बार मिलने लगे जो बाद में स्वैच्छिक शिक्षक फोरम बन गया, क्योंकि उन्होंने अपने निजी समय में स्वेच्छापूर्वक अपनी क्षमता का निर्माण करने की बात सोची। विषय के शिक्षक अपने विषय में विशिष्ट बातें पूछने लगे और इस तरह से विषय विशेष शिक्षक फोरम की रचना हुई। बाद में ये मंच शिक्षा के उद्देश्य और उसके परिप्रेक्ष्य पर भी चर्चा करने लगे। स्वैच्छिक शिक्षक मंच बहुत सक्रिय हो गया और इसमें क्षमता निर्माण की अनेक गतिविधियाँ होने लगीं। यहाँ अँग्रेजी में 'परिवर्तन एजेण्ट' के अन्तर्गत प्रशिक्षित शिक्षक अपनी कक्षाओं में बहुत अच्छा शिक्षण करने लगे और सरकारी प्रशिक्षण सत्रों में उनका चयन संसाधक के रूप में भी हुआ। धीरे–धीरे शिक्षकों ने ज्यादा जिम्मेदारी लेनी शुरू कर दी और एक कोर समूह का गठन किया गया जो टी.एल.सी. का प्रबन्धन और संचालन करता है। जिला संस्थान की टीम द्वारा प्रकाशित सूचना/समाचार पत्र का कार्यभार धीरे–धीरे टी.एल.सी. द्वारा ले लिया गया। टी.एल.सी. शिक्षक की गतिविधियों का केन्द्र बन गया। कुछ शिक्षक खेल सामग्री की माँग करते तो कुछ को पुस्तकें चाहिए थीं। शिक्षक पुस्तकालय से पुस्तकें और प्रयोगशाला से विज्ञान के उपकरण लेकर उनका उपयोग कक्षा में करने लगे। वे शैक्षिक भ्रमण के लिए विभिन्न संसाधन केन्द्रों (चामराजनगर, कुप्पम) और कक्षा संचालन के अवलोकन के लिए केरल गए।

आज सुरपुर में छह और उत्तर–पूर्व कर्नाटक में बाईस टी.एल.सी. हैं। हमारे अपने समन्वयकों, सरकारी अधिकारियों और शिक्षक समूहों द्वारा चालित अनेक टी.एल.सी. भी हैं। टी.एल.सी. अपनी गतिविधियों की समय तालिका को औपचारिक रूप देने का प्रयास कर रहे हैं और उनका ध्यान शैक्षिक चर्चाओं और गतिविधियों पर केन्द्रित है। शैक्षिक कार्यों के साथ उन्होंने और भी बहुत कुछ करने का प्रयत्न किया है जैसे वीडियो बनाकर उनका प्रयोग कक्षा और सूचना/समाचार पत्रों में करना। कई शिक्षक 'नंगे पाँव शोध' (barefoot research) में शामिल हो रहे हैं। वे प्रासंगिक विषयों पर संगोष्ठियाँ, सम्मेलन, अनौपचारिक चर्चाएँ और कार्यशालाएँ आयोजित करते हैं। कोर कमेटी इस बात पर चर्चा कर रही है कि टी.एल.सी. में आने वाले शिक्षकों के लिए पाठ्यक्रम का विकास किया जाए। उत्तर–पूर्व कर्नाटक के अन्य टी.एल.सी.के सदस्य सुरपुर के टी.एल.सी. का दौरा करने आते हैं। ये अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

यहाँ समझने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि ये सारे शिक्षक बहुत दूरदराज, अविकसित और अल्प सुविधा प्राप्त क्षेत्रों में स्थित सरकारी प्राथमिक स्कूलों के शिक्षक हैं जो एक बड़ी चुनौती है। लेकिन शिक्षक समुदाय जीवन्त है, हर कदम पर कुछ सीखने को

उत्सुक है। इसके अलावा ये स्वैच्छिक शिक्षक मंच हैं, शिक्षकों का अधिगम समूह है, जिसे हम अभी तक समझ नहीं पाए हैं।

हमें नहीं जानते कि वास्तव में कौन–सी चीज इन्हें सफल बनाती है। हम किसी एक बात को इसका श्रेय नहीं दे सकते कि इसी जादुई छड़ी के घुमाने से काम हो गया। हमने बहुत सारे कार्य किए जिसे जैविक रूप से एकीकृत किया गया। हमने एक लम्बे समय तक यह सब किया है पर आज लगता है कि यह काफी नहीं है। यह तो एक प्रवृत्ति है जिसे हम देख रहे हैं और इसे कायम रखने के लिए इसकी नींव और जड़ों को मजबूती से जमाना जरूरी है।

इस यात्रा में हमने कुछ बुनियादी मान्यताएँ जुटाई हैं। इरादों का सच्चा और स्पष्ट होना अनिवार्य है और वे हमारे कार्य और क्रियाकलापों द्वारा ही दूसरों तक पहुँचते हैं। सब कुछ होना ही है, पहले माँग पैदा करना और फिर उसकी आपूर्ति करना। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षकों की क्षमता निर्माण के लिए टी.एल.सी. में हो रहे प्रयास उनके पेशेवर विकास को समृद्ध कर रहे हैं और उसमें योगदान दे रहे हैं। हम जब फील्ड में रहकर शिक्षकों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करते हैं तो उन्हें विश्वास हो जाता है कि हम काम शुरू करवाकर कुछ ही समय तक उनका साथ देकर गायब हो जाने वालों में से नहीं हैं, बल्कि हम तो एक सच्चे साथी की तरह हर ऊँच–नीच में उनके साथ हैं, उनके साथ काम करते हैं और उनके अनुभव व ज्ञान का सम्मान करते हैं। हम शुरुआत इस नजरिए से करते हैं कि हम कुछ नहीं जानते और ईमानदारी के साथ एक–दूसरे से सीखना चाहते हैं। कोई भी समुदाय ऐसे सम्बन्धों के ठोस आधार पर बनता है जो एक–दूसरे का आदर और विश्वास करे। शुरू में समूह के आपसी सम्बन्ध अनौपचारिक वातावरण में बनते हैं लेकिन पुख्ता अधिगम के लिए एक संरचित और व्यवस्थित प्रक्रियाओं की जरूरत होती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षक सीखने का आनन्द लें और स्वायत्तता की शक्ति का स्वाद चखें।

उमाशंकर पेरिओडी उत्तर–पूर्व कर्नाटक में शिक्षा और विकास के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की पहल का नेतृत्व करते हैं। विकास के क्षेत्र में उन्हें 25 सालों का अनुभव है। उन्होंने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के साथ ही बी.आर.हिल्स कर्नाटक में जनजातीय शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक योगदान दिया है। उन्होंने फील्ड के कार्यकर्ताओं एवं प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों को वह अनुसन्धान करने के लिए मूल स्तर पर प्रशिक्षण दिया है जिसे वे 'नंगे पाँव शोध' कहकर बुलाते हैं। वे कर्नाटक राज्य प्रशिक्षक संस्था के संस्थापक सदस्य भी हैं। उनसे periodi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल